© 2014 IJSRSET | Volume 1 | Issue 1 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-409
Themed Section : Engineering and Technology

अथर्ववैदिक कालीन वैज्ञानिक जीवन

डॉ0 मंजु लता
रीडर संस्कृत, हेमवती नन्दन बहुगुणा राजकीय स्नात्कोत्तर महाविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

अथर्वकालिक व्यक्ति स्वरूप जीवन व्यतीत करने के लिए सतत प्रयत्नशील रहते थे। उनका भैषज्य विज्ञान भारतीय संस्कृति के लिए अमूल्य देन है एक मंत्र से ज्ञात होता है कि तत्कालीन समाज में सैकड़ो भिषक् (चिकित्सक) लोग थे वहाँ इसी संहिता में इसका नाम (भेषज) वेद है वैदिक समाज में भिषक् कर्म ब्राह्मण के लिये वर्जित है। परन्तु अर्थवेद के प्रमुख ऋषिगण इस कार्य को प्रमुख व्यवसाय मानकर कर रहे थे। कदाचित् इस कारण से भी अथर्ववेद वेदत्रयी के समान आदर नहीं पा सका। अर्थवेद में एक स्थान में अथर्वन और अंगीरसी औषधियों का उल्लेख है। गोपथ ब्राह्मण में आंगरसों द्वारा मंत्र विद्या से तथा अथर्वो द्वारा रसीली औषधियों से उपचार का वर्णन है।

वेद के अर्थ में अथर्ववेद का सबसे प्राचीन नाम अथर्वांगरस ही प्राप्त होता है। ये दोनों ऋषिकुल अर्थवेद की उपचार की दो विधियों के प्रतिनिधि है। इसमें अथर्वो के शुभ आचारों और आंगरसों के विपक्षी शत्रुओं और भायायियों के उन्मूलन के लिए अभिशाप मन्त्रों का पर्याप्त मात्रा में उल्लेख है।

इन वैद्यकुलो का परिचय अन्य ग्रन्थों से भी मिलता है। भेषज (चिकित्सक) से सम्बन्ध बताकर भेषजं वा आथर्वाणि,(10.7.20)

उनकी औषधियों को देवों की औषधियों की भाँति गुणकारी कहा गया है। इससे अंगिरसों की अपेक्षा अथर्वा की समाज में विशेष प्रतिष्ठा और सफलता ज्ञात होती है। इन विवरणों से तो ऐसा प्रतीत होता है कि अथर्ववेद का प्रारम्भिक विषय अधिकांश रूप में आयुवैदिक था। व्लूमफील्ड महोदय ने भैषज्य सम्बन्धी अरसठ (68) सूक्तों का उल्लेख किया है। इसके साथ ही परवर्ती साहित्य में भी चिकित्सा शास्त्र के रूप में अथर्ववेद की महत्ता स्वीकृत है शतपथ ब्राह्मण में भी यह आशय प्राप्त होता है शांख्यायन श्रौतृ सूत्र में अथर्ववेद की भेषज् वेद कहा गया है।

अर्थवेदो वेदः सोडययिति भेषजं निगदेत् । (सांख्यान श्रौतृ सूत्र) श्रौ0सू0 सुश्रुत संहिता में तो आयुर्वेद की अथर्ववेद का अंग कहा गया है। कश्यप संहिता में भी आयुर्वेद की उत्पत्ति अथर्ववेद से बताई गई है। चरक संहिता में भिषक् शास्त्री चरक का कथन है कि चिकित्सक को अर्थवेद का अध्ययन करना चाहिए जिसमें स्वारित वाचन, दान, बलि, मंगल युक्त हवन नियम, प्रायश्चित उपवास और मंत्रादि के द्वारा चिकित्सा करने का विधान किया गया है।

अथर्ववेद से यह पता चलता है कि मनुष्य ने मनुष्येतर जीवों (पशुपक्षियों आदि) से औषधि शास्त्र का ज्ञान प्राप्त किया था। व्यक्ति ने देखा कि पशुओं में एक प्रकृत्या प्रेरणा होती है जिससे वे अपने चारों ओर प्राप्त वनस्पतियों का सेवन करते है। इसलिए विभिन्न पशुओं ने विभिन्न औषधियों का अन्वेषण करने में सहायता किया था। कुछ पौधों को वराह (सुअर) जानता है और कुछ की नेवला कुछ को सर्प और बहुतों को गंधर्व जानते है। **वाराहो वेद वारूधंनकुलो वेद भेषजीम्**

इन औषधियों को कुछ को मैं इस (रोगो) के लिए प्रयोग करता हूँ जो अंग रसी औषधियाँ है उसे सुपर्ण जानते है। कुछ को रघट जानता है। जिसे पक्षियाँ हंस और सभी पतत्री (पंखवाली) चिड़िया जानती है जिसे मृग जंगली पशु जानते है। उन्हें हम उनके लिए आवाहित करें।

यः सुपर्णा आंगिरसीर्दिव्या या रघटो विदुः
वयांसि हंसा या विदुयश्चि सर्वे पतत्रिणः
मृगा वा विदुशेषधीरन्ता अस्मा अवसे हुवं।। 816124

बहुत सी जिन औषधियों को गाये चर जाती है उनमें बहुतों को भेड़ो और बकारियाँ भी ये सभी औषधियॉ तुम्हारे लिए लाभप्रद और पोषक होवें'' इनके अतिरिक्त अन्यत्र भी सुपर्ण औषधि जानने और सूकर द्वारा खनने का संदर्भ है पशुओं के द्वारा प्राप्त भेषज ज्ञान के पश्चात् मनुष्यों में स्वयं भी कुछ उस क्षेत्र में अन्वेषण किया जिनको मनुष्य चिकित्सको (भेषज्) ने जाना उन सम्पूर्ण औषधियों को मैं लाता हूँ उनमें से कुछ फूलों और कुछ फल रहित है। ये औषधियों सौ वर्ष तक आयु लाभ करने में सहायता करती थी।

इनके साथ ही अन्य स्थल पर कुछ औषधियों को देवों द्वारा प्रदत्त और कुछ अथर्वो और अंगिरसो द्वारा ज्ञात किया हुआ कहा गया है। उनसे स्पष्ट है कि मनुष्य ने औषधि शास्त्र का ज्ञान सर्वप्रथम पशुओं और पक्षियों से सीखा था। पशु पक्षी का जीवन वानस्पतिक जगत पर ही आधारित था।

आथर्वण रांगरसीदै वीर्मनुष्यजा उत।
ओषधयः पजायन्ते यदा त्वं प्राण जिन्वासि।।

अतः मनुष्यों ने उन फलों और पौधों को हानिकारक समझा जिन्हें खाकर पशु बीमार हो जाते थे या मर जाते थे और धीरे–धीरे उनके ज्ञान में वृद्धि हुई। इस बात को कदापि अस्वीकृत नहीं किया जा सकता क्योंकि आधुनिक युग के चिकित्सा शास्त्र की प्रगति में भी पशुओं का अप्रतिम योग है।

रोगों के उत्पत्ति का कारण अर्ववैदिक लोगों का विश्वास था कि मनुष्य के शरीर में जो रोग उत्पन्न होते है उनके कुछ कारण है। कुछ तो बादलों और वायु के झोको से उत्पन्न होता है और अन्य तरह–तरह कीटाणुओ से उनका विश्वास था कि उनके रोग कुकृत्यों और बहुतों को भूत पिशाच, दानव गन्धर्व और देवों ने उत्पन्न किया है।

ऋतुओं से उत्पन्न एक स्थान पर सिर पीड़ा कफ (कास) और जोड़ो के दर्द का वर्णन मिलता है। वहीं विद्युत से प्रार्थना की गई है कि विद्युत तुम उस झकझोरने वाले रोग और जो हवा से तथा बादलों से उत्पन्न हुए है उन रोगों से हमें छुड़ाओ।

इसी प्रकार बहुत से रोग मौसम के परिवर्तन के कारण उत्पन्न हो जाते थे।

वर्तमान समय में भी आषाढ़, आश्विन (क्वार) और चैत्र माहीनों में भयानक रोग उत्पन्न होते है और अधिकांश लोग रोगगस्त हो जाते है।

आज की भाँति अथर्वकालीन व्यक्ति भी रोगों की उत्पत्ति का कारण पिशाचों राक्षसों गन्धर्वो और देवों को मानता था। सामान्यतया वह समझता था कि उसका जीवन पिशाचों के जाल ने घिरा है कभी कभी तो रोगों और इन दुष्टशक्तियों से अन्तर करना कठिन हो जाता है।

एक स्थान पर एक बालक के रोग कीटाणु को मारने के लिए इन्द्र की प्रार्थना की गई है। उनके वाद ही सम्पूर्ण पिशाचों के वध की घोषणा कर दी गई है।

सम्पूर्ण सूक्त में राक्षसों के साथ गन्धर्वो और अप्सराओं को अजा–शृगो औषधि के द्वारा भगाने का वर्णन है। इससे ज्ञात होता है कि यद्यपि ये सहायता भी करते थे परन्तु ये बीमारियों को भी उत्पन्न करते थे। शतवार औषधि उनका नाश करती थी।

अतः इससे समझ में आता है कि अथर्ववैदिक लोग वनस्पतियों और अभिचारों से भी रोगों का शमन करते थे। रोगों का शमन, देवों द्वारा कीटाणुओं के द्वारा रोगों को होने का उल्लेख है। अर्थववेद में तीन सूक्तों में कीड़ो से सम्बन्धित है। इससे स्पष्ट उल्लेख है कि भयानक बीमारियों के कारण ये कीड़े है। ये दृश्य और

अदृश्य है तथा शरीर के विभिन्न भागों में चले जाते है। ये कीड़े, आँतों में सिर में पसलियों में जहाँ कहीं भी है।

आज भी रोगों का कारण कीटाणु ही है।

अर्थववैदिक भिषक् (चिकित्सक) विभिन्न प्रकार की चिकित्सा प्रणाली को जानता है। कुछ रोगों का विनाश तो वह चीड़–फाड़ (शल्यतन्त्र) द्वारा करता है और कुछ का विनाश वानस्पतिक औषधियों से वह बहुत से रोगों को मंत्र विद्या से दूर करता है।

वह सम्पूर्ण शरीर के रोगों का विशेषज्ञ है उनके लिए उपयुक्त औषधियों का प्रयोग करता है उन वनस्पति का नाम है :–

अजशृंगी, अपामार्ग, आवसु, असिकिन, अरून्धी, आसुरी, कुष्ठः खादिरः, गुग्गुलु चीयुद्रुः दर्भ तलाशाः मधुला पिप्पली सोम इन सबसे ज्ञात होता है कि अथर्ववेद में वैज्ञानिक तत्व है तथा एक चिकित्सा विज्ञान है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. अथर्ववेद संहिता
2. गोपथ ब्राह्मण
3. अथर्वप्रातिशाक्य
4. अथर्ववेद अनुक्रमणी
5. वैदिक साहित्य का इतिहास
6. सत्य प्रकाश–वैज्ञानिक विकास की भारतीय परम्परा।